10 सिंदबाद की समुद्री यात्राएँ

- परिचयात्मक प्रश्न - विदेशी यात्री यात्रा हेतु किस साधन का प्रयोग करते हैं?
  - जब हवाई जहाज नहीं थे विदेश यात्रा किस प्रकार की जाती थी?
  - सड़क मार्ग की यात्रा और समुद्र मार्ग की यात्रा में कौन-सी रोमांचित करने वाली है?
- प्रतिबिंब - बालकों को यात्रा में हुई रोमांचक घटनाओं से परिचित करवाना।
- परिकल्पना - क्या आपने सिंदबाद की समुद्री यात्राओं के विषय में पढ़ा या सुना है?

(सिंदबाद को समुद्री यात्राओं का बहुत शौक था। वह घर पर कम ही रहता था। प्रायः अपनी नाव लेकर समुद्र में दूर की यात्रा पर निकल जाता था। उसकी ऐसी ही समुद्री यात्रा का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है।)

मैं कई दिनों से घर पर ही था। कुछ अस्वस्थ भी था। पिछली यात्रा से मैं काफी धन कमाकर लौटा था परंतु कुछ दिन में ही मुझ पर फिर से यात्रा करने का भूत सवार हो गया था। मैंने अपने कुछ अन्य साथियों से संपर्क किया। मुझे लगा कि वे भी मेरी तरह यात्रा पर जाने के लिए उतावले हो रहे थे। हमने परस्पर बातचीत कर यात्रा पर जाने का निर्णय ले लिया। हमने व्यापार के लिए माल खरीदा, उसे जहाज पर लादा और यात्रा पर रवाना हो गए।

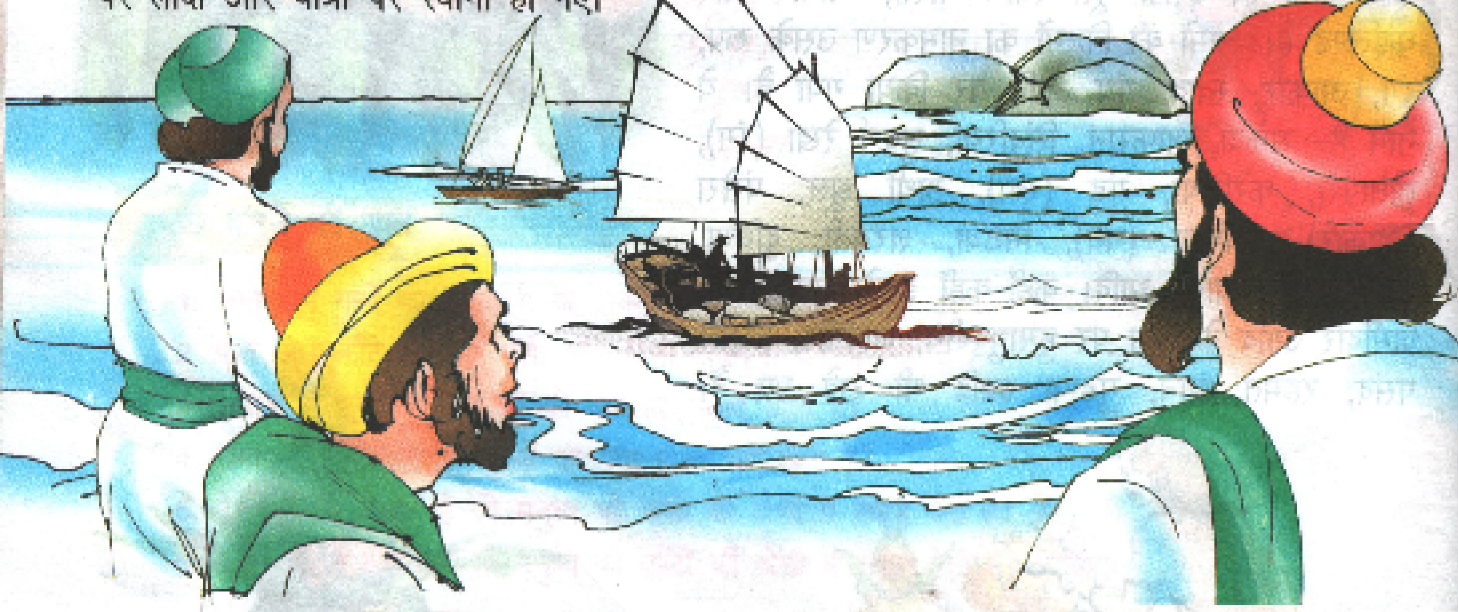

समुद्र को देखते ही मेरा मन लहरों की तरह उमंग से भर उठा। ऐसा लगा कि समुद्र मुझे बुला रहा है। रास्ते में किसी बंदरगाह के आते ही हम अपना माल वहाँ उतार देते। कुछ दिन में वह माल बेच वहाँ से नया माल खरीद लेते। एक बार हमारा जहाज बहुत दिनों तक किनारे नहीं लगा। दूर-दूर तक बस पानी-ही-पानी था। कुछ दिन ऐसे ही बीते कि एक छोटा सा टापू दिखाई दिया। जहाज को वहीं रोक लिया गया। मैं अन्य नाविकों के साथ टापू पर चला गया। टापू पर चारों ओर फलों के वृक्ष थे। मेरे साथी फल एकत्र करने लगे और मैं एक पेड़ के नीचे सो गया। सोकर उठा तो न जहाज था, न नाव और न ही मेरे साथी।

मैं उस टापू पर बिल्कुल अकेला था। क्या करूँ, कुछ समझ ना पाया। सोचा-पेड़ पर चढ़कर देखूँ, शायद आस-पास कोई बस्ती हो। एक ऊँचे पेड़ पर चढ़कर मैंने दृष्टि इधर-उधर घुमाई।

कुछ दूर एक सफेद-सफेद गुंबद सा दिखा। मैं नीचे उतरकर उस दिशा की ओर बढ़ा। अरे! यह क्या है? यह गुंबद-जैसा क्या है? मैं आश्चर्यचकित उसके चारों ओर घूमकर देखने का प्रयास करने लगा। अचानक सायं-सायं की आवाज आई जैसे तेज आँधी आने वाली हो। मैंने आकाश की ओर देखा। एक विशालकाय पक्षी मेरी ओर उड़ा चला आ रहा था। मैं भय के मारे उस गुंबद के पास दुबककर बैठ गया। वह पक्षी भी उसी गोल गुंबद पर आ बैठा। मेरे मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी। तो गुंबद नहीं यह इस पक्षी का अंडा है। इतना बड़ा पक्षी। उसके पंजे विशाल वृक्ष की शाखाओं के समान थे। उसके साँस लेने से मेरे कानों के परदे फटने लगे थे। वह हिलता तो मुझे लगता कोई छत गिरने वाली है। मैंने क्षणभर में ही कुछ सोच लिया। अपनी पगड़ी उतारी, मैंने अपने आपको उसके पंजों के साथ मजबूती से बाँध लिया।

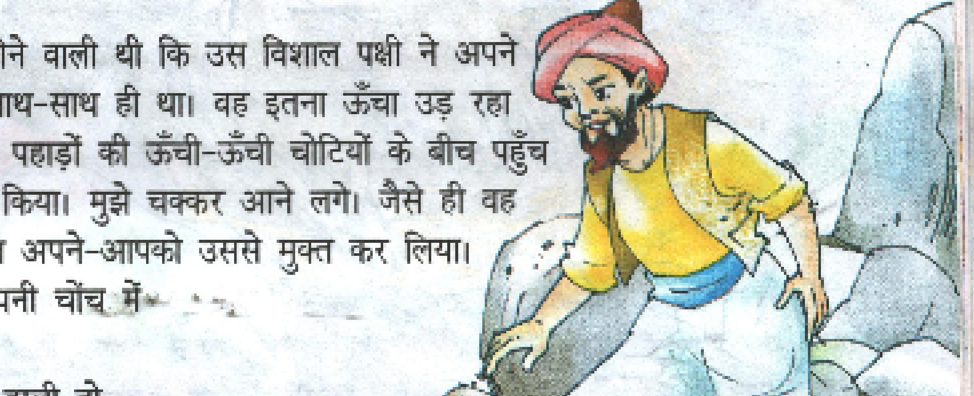

पूरी रात बीत गई। सुबह होने वाली थी कि उस विशाल पक्षी ने अपने पंख फैलाए और उड़ चला। मैं साथ-साथ ही था। वह इतना ऊँचा उड़ रहा था कि धरती दिख नहीं रही थी। पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियों के बीच पहुँच उसने तेजी से नीचे उतरना शुरु किया। मुझे चक्कर आने लगे। जैसे ही वह धरती पर उतरा, मैंने पगड़ी खोल अपने-आपको उससे मुक्त कर लिया।

उस विशालकाय पक्षी ने अपनी चोंच में एक साँप उठाया और उड़ गया।

मैंने अपने चारों ओर दृष्टि डाली तो पाया कि मैं एक गहरी घाटी में हूँ। चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे। घाटी में चारों ओर हीरे-ही-हीरे बिखरे थे। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न थी। क्या मैं सपना देख रहा हूँ? तभी मुझे फुफ्कार-सी सुनाई दी।

भय के मारे मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। घाटी में साँप-ही-साँप थे। पास ही एक गुफा देख मैं उसमें घुस गया। एक बड़े-से-पत्थर से उसका मुँह बंदकर मैं सोने की चेष्टा करने लगा, परन्तु मेरी आँखों में नींद कहाँ! साँपों की फुफकार और मृत्यु का भय दोनों मुझ पर हावी थे।

प्रातः गुफा का मुँह खोला तो देखा साँप कहीं भी न थे। थोड़ी देर बाद कुछ गिरा। घाटी में एक-के-बाद-एक मांस के टुकड़े गिरने लगे। मुझे बचपन की सुनी एक कहानी स्मरण हो उठी। लोग हीरों की घाटी में मांस के टुकड़े फेंकते और बड़े-बड़े उकाब उन्हें उठाकर ऊपर घोंसले में ले जाते। उनसे चिपके हीरे लोग इकट्ठे कर लेते।

मुझे इस घाटी से बाहर जाने का उपाय सूझ गया। मैंने कुछ हीरे और बहुमूल्य रत्न अपनी जेबों में भर लिए। इसके बाद मांस का एक बड़ा टुकडा अपनी पगड़ी से कसकर बाँध मैं उकाबों के आने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर में कई उकाब इधर-उधर मँडराने लगे। एक बड़ा उकाब मेरे सिर पर रखे टुकड़े पर झपटा और उसके साथ मुझे भी ले उड़ चला।

पहाड़ के ऊपर एक गाँव के बहार उकाबों के घोंसले थे। वहाँ कई उकाब जा उतरे। उकाबों के आते ही अपने छिपने के स्थान से निकल कुछ लोग शोर मचाने लगे। उकाब अपने घोंसले छोड़ उड़ गए। वे लोग भागकर आए और मांस के टुकड़ों से चिपके हीरों को बटोरने लगे। मुझे देखा तो चोर समझ झगड़ने लगे। मैंने पूरी घटना कह सुनाई और एक-एक हीरा देकर उन्हें संतुष्ट कर दिया। उन्हीं लोगों ने मुझे एक बंदरगाह तक पहुँचा दिया। समुद्र देख मेरा हृदय उछल पड़ा। मैंने कुछ माल खरीदा, उसे बेचता और नया माल खरीदता बसरा आया। वहाँ से अपने शहर बगदाद पहुँच गया। अपना देश, अपना शहर और अपना घर कितना प्यारा होता है, मेरी समझ में भलीभाँति आ गया था।

शब्दार्थ अस्वस्थ = बीमार। भूत सवार हो जाना = तीव्र इच्छा होना, विचार की प्रबलता होना, विचार को कार्यरूप देने हेतु मन-मस्तिष्क उसी में पूरी तरह से लगा रहना। निर्णय = फैसला। संपर्क = मिलना, मेल-मिलाप। बंदरगाह = पानी के जहाजों का रुकने, ठहरने का स्थान। उतावले = जल्दी में, दृष्टि = नजर, विशालकाय = बहुत बड़ा। चेष्टा = कोशिश, प्रयास। उकाब = चील जैसा बड़ा पक्षी। बहुमूल्य = बहुत कीमती। संतुष्ट = शांत, संतोष होना।

अभ्यास-कार्य

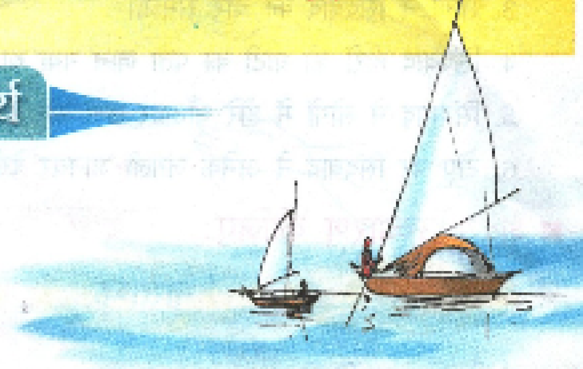

पाठ से

■ **बहुविकल्पीय प्रश्न**

(क) सही विकल्प के सामने ✓ लगाइए:

1. समुद्र को देखते ही सिंदबाद का मन-
   (अ) विचारों में डूब गया। ☐ (ब) लहरों की तरह उमंग से भर उठा। ✓
   (स) बीती यादों में डूब गया। ☐
2. सिंदबाद किस शहर का रहने वाला था, उसका नाम है-
   (अ) तेहरान ☐ (ब) काबुल ☐ (स) बगदाद ✓
3. एक बार जहाज बहुत दिनों तक-
   (अ) पानी में रुका रहा ☐ (ब) समुद्री तूफान में फँसा रहा ☐ (स) किनारे नहीं लगा। ✓
4. टापू पर जाकर मेरे साथी एकत्र करने लगे थे-
   (अ) फल ✓ (ब) हीरे ☐ (स) मोती ☐
5. कुछ दूर सफेद गुंबद सा दिखाई दिया। यह गुंबद-
   (अ) बड़ी इमारत थी। ☐ (ब) विशालकाय पक्षी का अंडा था। ✓
   (स) विशालकाय पक्षी का सिर था। ☐

(ख) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए:

1. पूरी रात बीत गई ___सुबह___ होने वाली थी। (दोपहर/सुबह)
2. उस विशालकाय पक्षी ने अपनी चोंच में एक ___सांप___ उठाया और उड़ गया। (पत्थर/साँप)
3. मैंने अपने चारों ओर दृष्टि डाली तो पाया कि मैं एक गहरी ___घाटी___ में हूँ। (खाई/घाटी)
4. पहाड़ के ऊपर एक गाँव के बाहर ___उकाबों___ के घोंसले थे। (उल्लुओं/उकाबों)
5. लोग हीरों की घाटी में ___मांस___ के टुकड़े फेंकते। (फलों/माँस)

(ग) रेखा खींचकर परस्पर संबद्ध वाक्यांशों का सुमेल कीजिए:

1. हमने व्यापार के लिए	(अ) वहीं रोक लिया गया।
2. ऐसा लगा कि	(ब) मैं काफी धन कमाकर लौटा था।
3. दूर-दूर तक	(स) माल खरीदा।
4. जहाज को	(द) समुद्र मुझे बुला रहा है।
5. पिछली यात्रा से	(य) बस पानी-ही-पानी था।

(घ) सही कथन के सामने ✓ तथा गलत के सामने × लगाइए:

1. सिंदबाद की समुद्री यात्रा समुद्री मार्ग से व्यापारिक यात्रा थी। ✓
2. सिंदबाद हीरों का व्यापार करता था। ✗
3. लोगों ने सिंदबाद को चोर समझा। ✓
4. सिंदबाद हीरों की घाटी का पता जान गया था। ✓
5. सिंदबाद ने लोगों में हीरे बाँटकर उन्हें संतुष्ट कर दिया। ✓
6. टापू पर सिंदबाद ने अनेक जंगली जानवर देखें। ✗

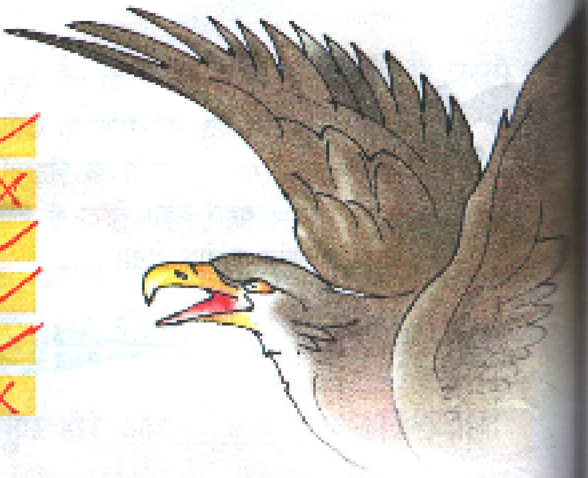

■ शुद्ध उच्चारण कीजिए:

गुंबद | मस्तिष्क | साँस | फुफकार | भलीभाँति

■ इनके उत्तर लिखिए:

1. सिंदबाद को किस प्रकार का शौक था?
   सिंदबाद को समुद्री यात्राओं का शौक था।
2. नई यात्रा की तैयारी सिंदबाद ने किस प्रकार की?
   नई यात्रा के लिये सिंदबाद ने अपने साथियों से बात की फिर व्यापार के लिये माल खरीदा और जहाज पर लादकर यात्रा पर निकल गया
3. सिंदबाद अपने साथियों से किस प्रकार बिछुड़ गया था?
   सिंदबाद एक टापू पर अपने साथियों के साथ पहुंचने पर यात्रा की थकान की वजह से नींद आ जाने के कारण साथियों से बिछुड़ गया था।
4. सफेद गुंबद जैसी वस्तु क्या थी?
   सफेद गुंबद जैसी वस्तु एक विशालकाय पक्षी का अंडा था।
5. सिंदबाद घाटी से बाहर कैसे आया?
   सिंदबाद ने अपने शरीर पर मांस का टुकड़ा, पगड़ी की सहायता से बांधकर उकाबों की प्रतीक्षा करने लगा। उकाब आये और सिंदबाद को उठाकर ऊंचाई वाले स्थान पर बने घोसलें में छोड़ दिये।

भाषा की बात

(क) निम्नलिखित शब्दों के साथ उपयुक्त विशेषण लिखिए:

1. विशालकाय पक्षी 2. जहरीले सर्प 3. बड़े पंख
4. गहरी घाटी 5. मालवाहक जहाज 6. स्वादिष्ट फल

(ख) क्रिया पदों पर गोला खींचिए:

1. मैंने पूरी घटना सुना दी।

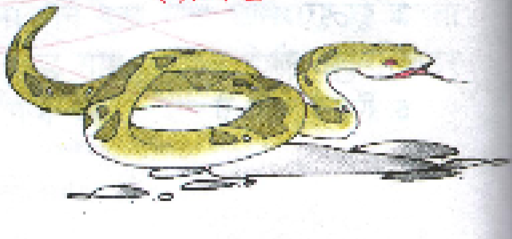

2. मैंने कुछ माल खरीदा।
3. थोड़ी देर बाद कुछ गिरा।
4. लोग हीरे इकट्ठे करने लगे।

(ग) वाक्यों में प्रयुक्त निर्देशित संज्ञाओं का प्रकार बताइए:

1. सिंदबाद ने स्वयं को एक घाटी में पाया। व्यक्तिवाचक
2. सिंदबाद ने अपनी पगड़ी उतारी। व्यक्तिवाचक
3. समुद्र देखते ही सिंदबाद का मन उमंग से भर उठा। भाववाचक

(घ) समानार्थी शब्द लिखिए:

1. उमंग	जोश	2. समुद्र	सागर
3. मस्तिष्क	दिमाग	4. निर्णय	फैसला
5. मुक्त	आजाद	6. स्मरण	याद

सहायता

सागर	जोश	याद
आजाद	फैसला	दिमाग

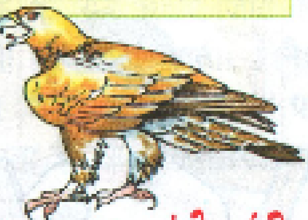

कुछ करने की बात

(क) हीरों की घाटी में पहुँचकर सिंदबाद को क्या-क्या अनुभव हुए? लिखिए:

हीरों की घाटी मे पहुँचकर सिंदबाद को चारो तरफ ऊंचे-ऊंचे पहाड़ दिखाई दिया। उसे हीरों का फैलाव चारों तरफ नजर आया। खतरनाक जहरीले सांप नजर आये। विशालकाय पक्षी उकाब दिखाई दिये।

(ख) सिंदबाद की समुद्री यात्रा में आपको जो बात सबसे अजीब लगी हो, उसे लिखिए:

सिंदबाद की समुद्री यात्रा मे सबसे अजीब बात यह थी कि वह इतनी खतरनाक परिस्थितियों मे रहते हुये भी सकुशल अपने घर वापस आया।

(ग) हमारे देश के किन प्रदेशों की सीमाएँ समुद्र से लगी हैं, उनके नाम लिखिए:

गुजरात	गोवा	केरल
महाराष्ट्र	तमिलनाडु	आंध्रप्रदेश
पं. बंगाल	उड़ीसा	कर्नाटक